अपना मकसद आप तय करें...

इस धरती पर रहने वाला हर मनुष्य अपनी ही चिंता का विचार करता है, लेकिन वो कभी ईश्वरीय चिंता का विचार नहीं करता। मनुष्य अपनी ही चिंताओं में इतना डूबा रहता है कि उससे ऊपर देखने की उसे फुर्सत ही नहीं। तो फिर ईश्वर की चिंता कहाँ से करेगा! आज हमें पर-पंचायत करने में रस है, तब भला ईश्वर से संवाद या संगोष्ठी कैसे हो सकेगी!

आज जन-सामान्य की मान्यता है कि ईश्वर रात-दिन हमें देख रहा होता है, हमारे कार्य को निहारता है, सद्-असद् भाव से भरे हुए वर्तन को निरखता है। लेकिन ये सब देखते हुए ईश्वर दूसरा भी विचार करता है... मनुष्य को छल-कपट करते देख, प्रेम या प्रपंच करते देख, वो सिर्फ दृष्टा बनकर रुक नहीं जाता।

- ब्र.कु. गंगाधर

हमारे सत् कार्यों को देख उनके चेहरे पर आनंद आता, हमारे दुष्कृत्यों के समय उनके मुख पर ग्लानि की रेखा छा जाए, इतने मात्र नहीं। इससे भी विशेष... वह सब निरीक्षण और परीक्षण कर इसपर विचार करता है कि उसके पीछे आपका हेतु और प्रयोजन क्या है? कौन सा विचार, इच्छा, लालच या उत्कंठा हमारे उस कार्य के पीछे रहे हुए हैं, ये भी देखता है। आप उसके साथ क्या करते हो, उसका कोई सम्बन्ध नहीं, लेकिन आप किसलिए करते हो, उसकी उनको फिकर रहती है। वे आपके कार्यों से प्रभावित नहीं होते, बल्कि आपके उस कार्य के पीछे प्रेरक बल कौन है, उसके बारे में विचार करते हैं।

महात्मा गांधी जी के विषय में 'हिंद-स्वराज्य' में मार्मिक बात कही गई है। उसमें लिखा है, 'आप मानते हो ऐसे साधन और साध्य और मुराद के बीच सम्बन्ध नहीं है, ये बहुत बड़ी भूल है। इस भूल से जो धर्मिष्ठ मनुष्य माना गया है, उसने घोर कर्म किया है। ये तो कड़वी बेल बोकर उसमें से मोगरे के फूल की इच्छा रखने जैसा हुआ। मुझे समुद्र पार करने के लिए नौका ही काम आ सकती है। यदि मैं बैलगाड़ी को पानी में डाल दूँ तो मैं और बैलगाड़ी दोनों ही समुद्र के तले में चले जायेंगे।' जैसा देव वैसी पूजा - ये बहुत विचार करने योग्य वाक्य है। उसके गलत अर्थ ने लोगों को भरमाया है। 'साधन' ये बीज है, और 'साध्य' प्राप्त करने का वृक्ष है, इतना ही साधन और साध्य के बीच सम्बन्ध है। शैतान की भक्ति कर मैं ईश्वरीय भजन के फल की प्राप्ति प्राप्त करूँ, ये होना मुमकिन नहीं। इसलिए ऐसा कहना कि हम तो ईश्वर को भजते हैं, साधन भले ही शैतान हो, ये तो बिल्कुल ही अज्ञान की बात है। 'जैसी करनी वैसी पार उतरनी'।

महात्मा गांधी ने साधन की शुद्धि पर ज़ोर दिया है। जितना महत्व साध्य का है, उतना ही महत्व साधन का भी है। मकसद भले ही आज़ादी का हो, लेकिन उसे प्राप्त करने के लिए हिंसा का मार्ग हो, ये अस्वीकार्य है। कोई उत्तम कार्य करने के लिए गलत इरादे का साथ लिया हो तो भी वो हानिकारक है।

ईश्वर को इस लोक में सबसे बड़ी चिंता मानव द्वारा परलोक में उत्तर देने की है। परलोक में मनुष्य ने अपने जीवन में क्या किया, ऐसा प्रश्न पूछने में नहीं आता। क्योंकि ये तो सब हिसाब-किताब पहले से ही ऑटोमेटिक तैयार हो चुका होता है। जीवन पूरा होते ही उसके सत् कर्म और दुष्कर्म का हिसाब हो चुका होता है, अब उसमें कुछ करने की ज़रूरत नहीं।

कर्म के हिसाब से व्यक्ति की गति निर्धारित हो चुकी होती है। वो उच्च गति प्राप्त करे या नीच गति, ये सब तय हो चुका होता है। ऐसे समय पर ईश्वर केवल हमारे उस कार्य के पीछे रहे हुए प्रयोजन पर विचार करेगा। कौन सी-कौन सी वृत्ति ने आपको किस गति से दौड़ाया और आप

- शेष पेज 3 पर...

यह हमेशा ध्यान रखो... हमारे सम्बन्ध केवल भगवान से हों

ऋषि-मुनियों के लिए सुनते थे कि वे त्रिकालदर्शी थे। आज हम बाबा के बच्चे विचार करते हैं कि इस समय हम त्रिकालदर्शी हैं तो स्थिति कितनी ऊँची है! तीसरा नेत्र खुला है तो त्रिकालदर्शी हैं। तीसरा नेत्र त्रिकालदर्शी बनाता है। त्रिकालदर्शी बनने से बहुत हल्के होते हैं। तभी तीनों लोकों की सैर करते हैं। ऐसा फील होता है जैसे यहीं कहीं एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहे हैं। नैचुरल हो गया है। ऐसे ही तीनों लोकों में आना जाना नैचुरल हो गया है। यहाँ संगम पर खुशी मना रहे हैं। ब्राह्मण जीवन है, सफल कर रहे हैं। सफल करेंगे तो सफलता मिलेगी। सफल करने के लिए दिल खुली रखेंगे, मन भी खुला रखेंगे तो सफलता मिलेगी। कर्म भी ऐसा हो जो दूसरों को प्रेरणा मिले। इसमें हमारी एक्यूरेसी हो। संकल्प एक्यूरेट होता है तो लक्की हैं। यदि संकल्प श्रेष्ठ नहीं होंगे तो आप समान नहीं बना सकते। आप समान बनाने की सेवा ऑर्डिनरी सेवा नहीं है। मैसेज देना भी बड़ी सेवा है। परन्तु उससे भी बड़ी आप समान बनाने की सेवा है। आप समान माना अपने समान नहीं, क्योंकि हमारे में भी जो कमी होगी वह आ जाएगी। कमी जल्दी आ जाएगी, अच्छाई बाद में आयेगी। बाबा समान बनाना माना बाबा के नज़दीक आना। उसकी बुद्धि अच्छा काम करेगी। बाबा के अच्छे सर्विसेबुल बनेंगे। सर्वशक्तिमान् से जुटे रहेंगे तो शक्ति आ जाएगी। अन्दर ध्यान रखना है कि हमारे सर्व सम्बन्ध भगवान् से हों। और कहीं सम्बन्ध नहीं चला जाये। बाबा से सर्व सम्बन्ध हैं तो यह शक्ति सर्व कमज़ोरियों को खत्म कर देती है। बाबा सर्वशक्तिमान् है, ज्ञान का सागर, प्रेम, आनन्द, शान्ति का सागर है, लेकिन वह गुण मेरे में कैसे आये, साथी में कैसे आये? जब सर्व सम्बन्ध एक बाप से होंगे तभी वह गुण आयेंगे। तो सूक्ष्म में हमारी भावना आप समान बनाने की क्या है? थोड़ा सेवा में मदद करें, क्लास करा लें, लिखाई-छपाई कर लें...वह तो जिसमें जो गुण, कला होगी वह करेगा। कर्मयोगी बनना है तो कर्म तो करना ही है। शरीर निर्वाह अर्थ भी करना है। लेकिन शरीर में जो आत्मा है उसकी सम्भाल भी करनी है। कर्मेन्द्रियों के द्वारा मेरी क्या सेवा है? कर्मेन्द्रियों के द्वारा आत्मा पतित से पावन बनती है। पतित भी बनी है तो कर्मेन्द्रियों के द्वारा बनी है। ऐसे पावन नहीं बनेगी। कर्मेन्द्रियों सहित जब इतने जन्म लिए हैं तो कर्मेन्द्रियों द्वारा जो कर्म किए हैं वो आत्मा के संस्कार बने हैं। फिर सम्बन्ध में, देह में आकर जो कर्म किए हैं वो कर्म भी पावन बनाना पड़ेगा। सम्बन्ध में भी हमारा कर्म बहुत अच्छा हो। खुद के साथ, औरों के साथ भी। अलौकिकता में लौकिकता न आ जाए-यह खबरदारी हमेशा रहे। लौकिकता में अलौकिकता हो। अगर इस तरह से कर्मों की गुह्य गति को समझकर निमित्त कर्म के सम्बन्ध में आकर भी खबरदार सावधान नहीं रहेंगे तो बाबा की याद इतनी नहीं रहेगी।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

सेवा से खुशी और सबकी दुआएं

हमने अपनी ज़िम्मेवारी बाबा को दे दी है और बाबा ने फिर हमको जो ज़िम्मेवारी दी कि बच्चे, आप विश्व-कल्याणकारी बन अपनी मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा, अपने सम्बन्ध-सम्पर्क अथवा कर्म द्वारा विश्व सेवा करते रहो। इस ज़िम्मेवारी को निभाने से खुशी होती है क्योंकि जब विश्व की आत्माओं का कल्याण हो जाता है तो जिसका अकल्याण से कल्याण हो जाये, उसके दिल से दुआएं निकलती हैं और वह दुआएं हमको मिलती हैं तो वह दुआओं का खज़ाना जमा होने से हमको भी खुशी होती है, उमंग-उत्साह आता है कि सेवा में और आगे बढ़ते जायें, इसीलिए बाबा की ज़िम्मेवारी बहुत हल्की है और प्राप्ति कराने वाली है, क्योंकि दुआएं मिलना, दुआएं जमा होना यह एक बहुत सूक्ष्म प्राप्ति है। मानो आपने किसी को परिचय दिया और वह बाबा का बन गया तो उसके मन से बार-बार निकलता है कि आपने हमको सही रास्ते पर लगा दिया, तो यही उनके दिल की दुआएं मिलती हैं। यह भी सबको अनुभव होगा कि जब भी हम किसी की सेवा करते हैं, चाहे भाषण करें, चाहे व्यक्तिगत रूप से किसी को बाबा का परिचय दें तो उसी समय प्रत्यक्षफल मिलता है। अंदर-ही-अंदर बहुत खुशी होती है, यह बाबा का बन गया। तो खुशी भी होती और दुआएं भी जमा होती। तो जब इतनी प्राप्ति है तो बोझ नहीं लगता। कहाँ से छोटी सी भी प्राप्ति हो जाती है तो अल्पकाल की खुशी कितनी होती है। एक लाख की लॉटरी आ गई तो कितनी खुशी में नाचते रहते हैं, पागल भी हो जाते हैं। हमको तो परमात्मा द्वारा खुशी का खज़ाना मिलता है, हमारी खुशी अविनाशी है। उन्हों को विनाशी चीज़ों के कारण मिलती है इसलिए विनाशी है और हमको अविनाशी द्वारा मिलती है इसलिए हमारी खुशी अविनाशी है। तो बोझ हट जाता है, डबल लाइट बन जाते हैं और जो डबल लाइट होगा वह नाच सकता है। हम कोई पांव से नहीं नाचते, बल्कि हमारा मन खुशी में नाचता है और खुशी में तो सभी नाच सकते हैं, चाहे कोई कितने भी बीमार हों, क्योंकि यह मन की बात है, हाथ-पांव चलाने की बात नहीं है। तो सभी इस प्रकार से खुशी में नाचते रहते हो?

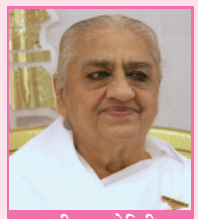
दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

अभी तो मधुबन में एक्स्ट्रा खुशी मिल गई, सबके चेहरे खुशी में मुस्कुराते हैं, लेकिन घर-परिवार में कभी कोई बात आ गई तो चेहरा बदल जाता है। कभी सोच में, फिकर में, कभी चिन्ताओं के सागर में डूब जाते, एक दिन चेहरा बहुत खुश और दूसरे दिन देखें थोड़ा सा उदास.. पूछो भाई क्या हो गया? तो क्या कहते, आपको क्या पता हमारी प्रवृत्ति की बातें... आप तो अलग रहते हैं। भल हमारे सामने आप जैसी कोई बातें नहीं आती हैं, लेकिन अनुभव सुनने से भी तो अनुभव हो जाता है ना। ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि यह कुएं में गिरा तो हम भी गिरके देखें। उनके अनुभव से हमको अनुभव हो जाता है कि कुएं में गिरना अच्छा नहीं है। तो सभी बातों की एक ही दवा है अपनी सब ज़िम्मेवारियाँ बाबा को दे दो। अपने ऊपर नहीं उठाओ।

नये जन्म में कोई संकल्प-विकल्प न हो

बाबा ने लक्ष्य दिया कि तुम अपने चार्ट में देखो कि मैं निरहंकारी कहाँ तक हूँ? वह तब होगा जब देह का भान न हो। निर्माणता से निरहंकारी बनते, दिलों को जीत लेते लेकिन इससे भी ऊपर देह का भी भान न हो। हमें इन सबसे ऊपर जाना है। कई बार पूछते हैं दादी आपका पुरुषार्थ क्या है? मैं एक ही शब्द में कहती हूँ मैं खुद को चेक करती हूँ मेरे चार्ट में कि मैं कर्मातीत स्थिति के कितना समीप आई हूँ? अगर कोई सूक्ष्म पाप भी है तो तपस्या से, बाबा की याद में निराकारी स्थिति में रहकर अपने को इन सब बातों से परे ले जाकर खत्म करना है। क्योंकि हमें कर्मातीत होकर विजयी बनना है, नम्बरवन का वरदान लेकर जाना है। अपने चार्ट को देखने की बहुत अच्छी विधि होती। बाबा हमारे सामने है और बाबा ने हमें निराकारी स्थिति का आइना दे रखा है। अपने आइने में अपनी आत्मा को देखो कि इस प्योर आइने में मैं आत्मा कितनी प्योर मणि बन गई हूँ? इम्प्योरिटी का तो सवाल ही नहीं है। उन संकल्पों-विकल्पों को तो लाना ही नहीं है। अपने को उनसे बहुत ऊँचा ले जाना है। इम्प्योरिटी तो पिछले जन्म में थी, यह तो नया जन्म है। यह भी आलस्य है जो कहते हैं क्या करें पिछले जन्मों के संस्कार हैं, अभी यह भाषा राजयोगियों की नहीं है। बाबा के समीप रत्नों को यह भाषा नहीं बोलनी चाहिये। यह तो पिछले जन्म की भाषा है। हम तो हैं ही बाबा की मुख सन्तान, प्योर रत्न। बाबा भी कहते तुम ब्राह्मण कुल के हो, मुख वंशावली हो, हमारा जन्म नया है तो इतनी प्योर हमारी आत्मा हो जाये जो किसी भी प्रकार का हिसाब किताब पाप कर्म का नहीं हो, तब कहेंगे कर्मातीत। तो यह बहुत सहज विधि है, अपने सामने आइना देखो। सूक्ष्म टी.वी.में सारे चार्ट को इमर्ज करो। फिर क्या अनुभव होता कि मैं आत्मा कहाँ तक प्योर बनी हूँ? न ममता है, न कोई प्रकार की इच्छा है। जब यह कुछ नहीं है तो न मान है, न अभिमान है। सिर्फ स्वमान है कि हम बाप के समान नम्बरवन आत्मायें हैं, और रूद्र माला की, अपने परमधाम की प्यारी आत्माएं हैं, हमें घर जाना है। यह स्थिति एंजिल स्थिति से भी ऊँचा ले जायेगी। इसके लिए योग के डीप में जाओ। बिल्कुल पार चले जाओ। सागर के तले में चले जाओ। चोटी में चले जाओ। जिसे बीजरूप कहते हैं। ऐसा लगेगा जैसे मैं आत्मा एकदम लाइट की दुनिया में हूँ। जब ऐसी फीलिंग योग में रहती तो कर्म में भी बहुत शक्ति मिलती है। फिर दुनिया को भी साइलेन्स के वायब्रेशन्स मिलते हैं। तो ऐसे साइलेन्स के वायब्रेशन्स हमें सारे विश्व को देना है। इतनी साइलेन्स की मेरे पास स्वयं में शक्ति हो जो सामने वाला वह शक्ति लेकर जाये। इसकी ही दुनिया में मांग है।

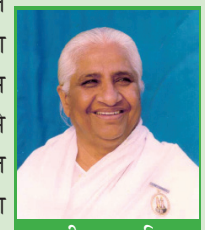
दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका